LOVE 8

९० प्रतिशत से ऊपर भक्त जो भक्ति करते हैं, वे सुकृति प्राप्त होती है उससे, उस प्रकार की भक्ति से। परन्तु यदि हम ऐसी भक्ति करना चाहते हैं, जिससे वास्तव में आनंद की अनुभूति हो..., that bliss, that happiness, that ecstacy, enters our veins... enters our atoms, every molecule of our body.... तो आज का सत्र, उन सब भक्तों के लिए है। अगर वैसी भक्ति करना चाहते हैं, जिससे रोम रोम में आनंद, रोमांच हो। आज के सत्र को सुनना ही पर्याप्त नहीं है केवल, सुनना अच्छी तरह, समझकर लागू करना अनिवार्य है।

जो सब जीव हम देख रहें हैं, या हम स्वयं हैं, हम अपना रास्ता देखें, journey को देखें, तो हम क्या देखेंगें, कि हम अनंतानंत जन्मों से घूम रहे हैं, अनंतानंत जन्मों से, अनंतानंत लोकों की यात्रा कर चुके हैं। अनंतानंत बार हमारे को धक्के दिए गए हैं, अनंत लोकों से, अनंतानंत युगों में हम जा चुके हैं, अनंतानंत लोगों से मिल चुके हैं, अनंतानंत प्रयत्न कर चुके हैं। कहाँ कहाँ से होकर हम यहाँ पर नहीं आए हैं? कौन से स्थान पर? यही वैवस्वत् मनु के एक कलियुग के अंदर। कितने मनु आए कितने गए, हमनें..., हमारा धक्के खाने का अन्त नहीं हुआ। किसलिए हो रहा है यह सबकुछ? यह इसलिए हो रहा है कि हमारी जो एक fundamental need, eternal need..., या जिसे वास्तव में कहें ONLY NEED जो है, वो fulfill नहीं हो रही है। क्या है आप सब जीवों की एकमात्र आवश्यकता..., नित्य आवश्यकता..., अनिवार्य आवश्यकता..., क्या है? क्या है जीव? What is Jīva? जीव क्या चाहता है? जीव चाहता है, वही जो उसके अंशी चाहेंगें। अंश..., भगवान् के अंश हैं। वेदों में बताया गया है-

"नाना अंश व्यपदेशः"

"हम भगवान् के अंश हैं।"

भगवान् स्वयं बता रहें हैं, *ममैवांशो*..., "तुम मेरे अंश हो।"

तो भगवान् जिस प्रकार से आनंद प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार से आनंद प्राप्त किए बिना, हमारी जो need है, वो पूरी नहीं होगी। किस प्रकार से भगवान् आनंद प्राप्त करते हैं? संबंधों से, Loving Relationships, प्रेम से।

So our fundamental need is... LOVE.

Our eternal need is... LOVE...!

यह बोलना ठीक नहीं है। वास्तविक्ता क्या है? Our only need is LOVE... प्रेम से ही..., हम प्रेम प्राप्त करके ही, प्रेम से परिपूर्ण होकर ही, हम आनंद प्राप्त कर सकते हैं। भगवान् संबंधों के द्वारा आनंद प्राप्त करते हैं..., Relationships के द्वारा । तो जब तक हमें वो Relationships प्राप्त नहीं होंगी, वो Relationship प्राप्त नहीं होगी, तब तक हम आनंद प्राप्त नहीं कर सकते। सोचिए न, अनंतानंत जन्मों से अनंतानंत युगों की यात्रा, युगों... की, युगों... की यात्रा कर-कर के, अनंतानंत लोकों की यात्रा कर-कर के हम आए हैं, परन्तु हमारी need एक ही है, हम चाहते केवल एक चीज़ हैं।

हम हैं कौन... यह समझना बहुत ज़रुरी है, तभी हम यह समझ पाएँगें की हम चाहते क्या हैं? यह समझ आया की हम प्रेम चाहते हैं। पर हम हैं कौन? हम चिन्मय तत्व हैं..., totally Spiritual being..., totally Spiritual..., Divine..., we all are divine by our very nature..., आत्मा मतलब Divine..., अनंतानंत जन्मों से हम कोई चीज़ छोड़ नहीं पा रहे चाहना। जो हम चाहते हैं न..., we are divine and our desires are only divine..., and they can only be fulfilled by divinity... हम matter चाहते ही नहीं हैं, चाह सकते ही नहीं हैं। By our very constitution we are divine and we can only desire divinity and nothing else..., प्रेम, आनंद, यह material शब्द नहीं हैं। We desire love, actually we desire anti-material thing, Spiritual thing, that is Love..., प्रेम जो है, आनंद जो है, इस जगत का नहीं है। प्रेम जो है वो चिन्मय शब्द है, आनंद चिन्मय शब्द है। Love is a Spiritual experience of a living entity... Happiness is a Spiritual experience of a living entity... उसका इस जगत से, जगत के आदान प्रदान से, किसी प्रकार का कोई संबंध न था, न है, न होगा। यह बात समझना बहुत ज़रुरी है, कि हम कौन हैं और हम क्या चाहते हैं, और हम क्या चाह सकते हैं। सारे शास्त्रों का निचोड़ क्या है?

"पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोए।
ढाई अक्षर प्रेम के, पढ़े सो पण्डित होए।।"

(कबीरदास)

प्रेम..., Love..., this is all what we want..., all the time..., not sometimes...

हम भक्ति में आए हैं, भक्ति है क्या वास्तव में? अब बताइए। भक्ति क्या है..., सेवा को भक्ति कहतें हैं केवल? किसी भी प्रकार से सेवा? नहीं! भक्ति का मतलब ही by definition है, Loving Devotional Service, प्रेममयी सेवा। Worship is Love only, nothing else... हम सोचतें हैं धूप अगरबत्ती घुमाना, माला करना भक्ति? Actually

ठीक है। पर Worship primarily is Love... Worship is Love only... What is worship? Ask yourself... What is worship? हम भक्ति कर रहें हैं, then what is Bhakti? Bhakti means Love... Loving devotional service to Guru and Gaurāṅga.... This is Bhakti... Not devotional service..., loving...!!! लिखना छोड़िये..., सुनिए। मैं जितना भी बोलूंगा वो सब कुछ लिखना होगा। उसको हम transcribe कर लेंगें। एक word भी आप नहीं छोड़ सकते हो। छोड़ने योग्य है तो मैं बोलूंगा नहीं। ऐसा नहीं है कि Goal of our Spiritual life is Loving devotional service..., ऐसा नहीं है। Goal का मतलब बहुत समय बाद जो करना है, न।

अच्छा,

Goal of our Life is- "Loving Devotional Service"...

then Goal of every year should be?

"Loving Devotional Service..."

Goal of every month should be?

"Loving Devotional Service to GURU and GAURĀṄGA"

Then Goal of every week should be?

"Loving Devotional Service to GURU and GAURĀṄGA"

Goal of everyday should be?

"Loving Devotional Service to GURU and GAURĀṄGA"

Then Goal of every hour should be?

Again same - "Loving Devotional Service to GURU and GAURĀṄGA"

Goal of every minute should be?

"Loving Devotional Service to GURU and GAURĀṄGA"

No price for guessing this... And goal of every second should be?

"गुरु गौरांग की प्रेममयी सेवा।"

हर second प्रेममयी सेवा, यह हमारा प्रयोजन है। यह करना करना चाहते हैं हम। ये तो समझ आ रहा है प्रेममयी सेवा से आनंद मिलेगा..., भगवान् को भी वैसे ही। भगवान् ने आनंद कैसे प्राप्त करते हैं? प्रेममयी संबंधों से। संबंध कैसे होते हैं? सेवा से। तो हमें कैसे आनंद मिलेगा? प्रेममयी सेवा से। कब-कब प्रेममयी सेवा करनी होगी? प्रतिक्षण। किसको? मुझको। मैं कौन हूँ? चिन्मय तत्व हूँ..., Particle of Service. Spiritual..., Spiritul Spark हूँ मैं..., nothing else..., इसको आनंद चाहिए।

अब यह आनंद प्राप्त कैसे होता है? हमारे सारे Lectures scientifically समझने चाहिऐं हमें और फिर उसे practically लागू भी करना चाहिए। Where were we? हमारी constitutional position..., मैं जो आत्मा हूँ, वह dependant enjoyer है। Dependant... थोड़ा-थोड़ा लिखना चाहो तो ठीक है पर ज्यादा नहीं। Dependant enjoyer..., dependant... किस पर? उन पर। भक्ति दो ही प्रकार से होती है और हमेशा प्रेममयी ही होती है। यह समझ लीजिए बात। भक्ति कामचलाऊ नहीं होती। कामचलाऊ तो संसार के संबंध हैं। भक्ति प्रेममयी होती है।

भक्ति कैसे होती है दो प्रकार की? हम कितने समय से चर्चा कर रहें हैं, या तो सामान्य, या वैशिष्ट्य। सामान्य मतलब लीला चिन्तन के द्वारा ठकुरानी के हृदय को touch करना, गौर हृदय को स्पर्श करना। तो उनके हृदय को जो हमारी क्रिया छुएगी, उनके हृदय से स्पंदन होकर हमारे हृदय में प्राप्त होगा, वो आनंद, वो ही प्रेम है। Dependant enjoyer हैं। We want happiness but we are dependant enjoyers... We want Love but we want Reciprocated Love..., Reciprocated by whom? By God..., by Guru... दूसरी सेवा कौन सी है? या तो अष्टकालीय चिंतन कर रहें हैं तो, गौर राधा हृदय को..., जो उनके हृदय को छू के जो हमारे हृदय में प्रवेश करेगा, that is Reciprocated Love... The other is Vaiṣiṣṭyalipsu Sevā, जो गुरु के हृदय को हमारा कार्य छुएगा, वहाँ से जो छू के हमें प्राप्त होगा, वह आनंद है।

प्रेम को छूकर ही हमें प्रेम मिलेगा। राधारानी प्रेमस्वरूपाय, प्रेम हैं वह, साक्षात् महाभाव स्वरूपिणी हैं।

"प्रेम परम सार महाभाव जानी।
महाभाव स्वरूपा राधा ठकुरानी।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला ४.६८-६९)

वह प्रेम का मूर्तिमान स्वरूप हैं, उनको छू के आया तो हमें मिलेगा, Reciprocated Love... गुरु का हृदय भक्ति महारानी का स्थान है, उनको छू के आएगा तब हमें आनंद, प्रेम की अनुभूति होगी। Reciprocated Love...

वास्तव में भगवान् जीवों को दर्शन देना चाहते हैं पर वह क्या करें, मजबूर हैं कि वह अपने साक्षात् दर्शन दे नहीं सकते जीव को, जीव के पास योग्यता नहीं है। क्योंकि प्रेम के अभाव में साक्षात् दर्शन कैसे दें भगवान्? विवश हैं। परंतु जब उनकी इच्छा बहुत तीव्र हो जाती है जीव के ऊपर अति करुण होने की, तो वे स्वयं गुरु रूप में आतें हैं अपना दर्शन देने के लिए बद्ध जीव को, ताकि उनके उस प्रकार से दर्शन करके जीव अनंतानंत लाभ प्राप्त कर सके और साधन भक्ति करके फिर उनके साक्षात् दर्शन प्राप्त कर सके। इसलिए भगवान् अति करुण होकर गुरु के रूप में आते हैं। भगवान् ही आते हैं। अगर साक्षात् दर्शन भगवान् स्वयं श्यामसुन्दर रूप में देंगें भी सही, तो भी जीव को आनंद आस्वादन नहीं होगा। किस कारण से? प्रेम के अभाव में। प्रेम नहीं है, प्रेम ही एकमात्र कारण है जिससे आप भगवान् का माधुर्य आस्वादन या आनंद आस्वादन कर सकते हैं। परन्तु भगवान् इतने करुण हैं, कि साक्षात् दर्शन की योग्यता हम में नहीं है, इसलिए स्वयं गुरु रूप में आते हैं हमारे को साक्षात् दर्शन की योग्यता प्राप्त करवाने के लिए। तत्व में गुरु और भगवान् एक हैं।

"आचार्यं मां विजानियान्नावमन्येत कर्हिचित्।
न मर्त्यबुद्ध्यासूयेत सर्वदेवमयो गुरुः।।"

(श्रीमद् भागवतम्-११.१७.१७)

"मुझको आचार्य से भिन्न मत समझो।"

अब जीव जो है dependant enjoyer है। Reciprocated Love चाहिए जीव को। यह मिलेगा कैसे? यह मिलेगा ऐसे कि हमें समझना पड़ेगा कि हम हैं क्या? हम हैं आत्मा, Particle of Service. Particle of Service by definition ही है कि हम serve करने के लिए ही बने हैं, मतलब हम giving के लिए ही बनें हैं। Taking तो हमारा, taking से हमारा कोई लेना-देना ही नहीं है। देना-देना के लिए बने हैं हम। लेना-लेना से तो कुछ नहीं मिलेगा, लेना-लेना से तो illusion मिल रही है, illusion मिलेगी, थप्पड़ मिल रहें हैं, थप्पड़ ही मिलेंगें। लेना-लेना। लेना-लेना मतलब दुख लेना, और कुछ नहीं लेना। Happiness, Love cannot be bought..., आप खरीद नहीं सकते हो। लेना..., कैसे लोगे बताओ? खरीद लोगे? नहीं। Dependant enjoyer हैं हम। उनके हृदय को जब

तक स्पर्श नहीं करेगी हमारी किया, प्रतिक्षण की किया, जब तक स्पर्श नहीं करेगी, तब तक आनंद का, प्रेम का लव-लेश भी हमें प्राप्त नहीं होगा। जिस क्षण हम देना-देना भूलते हैं, जिस क्षण..., उस क्षण हम दुखी होंगें ही होंगें। क्योंकि मैं Particle of Service हूँ और serve करके ही मैं खुश हो सकता हूँ। प्रतिक्षण! Goal of every second, every moment has to be देना-देना। आप देते रहो, यह नहीं सोचो किसने क्या किया? किसने क्या किया उसको छोड़ो, आपने दिया कि नही? दिए बिना तो आप खुश हो नहीं सकते।

और देना कितना है? कैसा है? Love is All..., Love takes all and Love gives all... What is more important than Love? What is higher than Love? When we want only Love, nothing can be higher than Love..., and Love means Reciprocated Love...

हम बोलते हैं, मुझे कोई प्यार नहीं करता, no one loves me.. कितने लोगो का यह रहता है। हम हाथ खड़ा करने के लिए नहीं बोलेंगें, अंदर से हाथ खड़ा कर लीजिए कि no one loves me... इसका मतलब यह है, कि मैं किसी को प्यार नहीं करता। यह indirect way है बोलने का, कि I don't love anyone... हृदय को सोचेंगें तो कहेंगें बात तो ठीक है। नहीं सोच पा रहे एकदम से, तो हम आपको सुचवा देते हैं। आप अपने आप को खुद पूछो, कि ऐसा कोई व्यक्ति है जिसको मैंनें प्यार किया हो वास्तव में? कि सिर्फ उसकी प्रसन्नता के लिए मैं कार्य करना चाहता हूँ..., सिर्फ उसी की प्रसन्नता के लिए..., अपना कोई स्वार्थ नहीं। I want to be a source of happiness even if I am not the part of their happiness... I want to be the source of their happiness..., just giving... Just on the giving end..., never even think of..., think in dreams about receiving. This is Love... This is Love...

Love is not a physical experience... जिसको हम lust..., lust को Love समझते हैं इस संसार में। Love is not a physical experience..., it's a Transcendental experience... Don't be physical in thinking what is Love... Love is a Spiritual Experience not a physical one...

प्रेम में physical चीज़ों का कोई स्थान नहीं है।

प्रेम में इन्द्रिय तृप्ति का कोई स्थान नहीं है।

प्रेम में वासना सिद्धि का कोई स्थान नहीं है।

यह वासना सिद्धि क्या होती है? हमारी इच्छाओं की पूर्ति। इसको वासना सिद्धि..., वासना मतलब..., sensual lust सिर्फ नहीं होता। वासना is not just sex..., it is..., वासना means your desires..., वासना सिद्धि का कोई स्थान नहीं हैं प्रेम में...। प्रेम तो..., लेना जानता ही नहीं है। प्रेम तो देना जानता है केवल। प्रेम को पता ही नहीं है लेना शब्द क्या होता है। उसकी dictionary में ही, सुषुप्ति में, कहीं पर भी नहीं है।

क्योंकि we have a veryy..., veryyy....., strong loving propensity..., Very Strong..., इसकी पूर्ति किए बिना हम सुखी रह ही नहीं सकते। हम संसार में देखते हैं कि यह पूरी किए बिना कार्य होगा नहीं। प्रतिक्षण यही चाहिए। तो जब पता ही नहीं है किनको प्रेम करके मुझे प्रेम मिलेगा, तो कहीं न कहीं गलत जगह तो प्रेम करेंगें। कहीं न कहीं गलत जगह तो प्रेम करना पड़ेगा, नहीं चाहोगे तो भी करना पड़ेगा। क्यों? क्योंकि सही जगह नहीं कर रहे। प्रेम किए बिना हम रह नहीं सकते। प्रेम किए बिना हम नहीं रह सकते।

वास्तव में यह जो भी हम कार्य कर रहें हैं, वास्तव में हम आनंद प्राप्ति और प्रेम प्राप्ति ही चाहते हैं प्रतिक्षण। नहीं तो हम क्यों जीवित हैं? क्यों जीवित हैं? आनंद..., प्रेम से प्राप्त होगा। प्रेम देकर प्राप्त होगा। प्रतिक्षण देना-देना करने के लिए ही हम जीवित हैं। इसलिए कहते हैं कृष्ण भक्त बड़ा चतुर। कृष्ण की ही सेवा करता है। उन्हें पता है, वहीं से आनंद...,वह ही आनंद का स्तोत्र हैं।

"अहं सर्वस्य प्रभु मत्तः सर्वं प्रवर्तते।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः।।"

(गीता-१०.८)

"सब कुछ मुझसे आता है। सब कुछ।"

अब आपको एक श्लोक प्राप्त हुआ होगा। आपके इस प्रेम को समझने के अंदर यह श्लोक काफी सहायतामंद हो सकता है। और यह श्लोक याद रह जाए किसी को तो वे भ्रम में नहीं रह सकता कभी जीवन में।

भगवान् राम...,मर्यादा पुरुषोतम राम हमारी सहायता कर रहें हैं।

"जननी जनक बंधु सुत दारा, तनु धन भवन सुहृद् परिवारा।
सब कै ममता ताग बटोरी, मम पद् मनहि बांध बरि डोरी।।"
(श्री रामचरित् मानस)

यह भगवान् राम ने बोला है। क्या? वह कह रहे हैं कि इसको व्यर्थ के कार्यों में, जड़ पदार्थो में क्यों लगा रहे हो? वह बता रहें हैं, क्या कर रहें हैं हम और हमें क्या करना है? यह दो पंक्ति में सारे रहस्य छुपे हैं। क्या कर रहें हैं, क्या करना है।

जननी-जनक : माता-पिता, समझते हैं भाषा? जननी-जनक।

बंधु : friend, brother...

सुत : *शची सुत होइलो सेई बलराम होइलो निताई।* सुत मतलब पुत्र, पुत्री

जननी-जनक, बंधु सुत दारा... spouse... wife husband... दारा।

तनु धन भवन...

तनु : देह

धन : धन means money...

भवन : आपका घर, आपका Office

तनु धन भवन, सुहृद...

सुहृद : well-wishers...

परिवारा : no need to explain...

सब कै ममता ताग बटोरी, यहाँ पर तुमने अपनी Loving Propensities डाली हुई हैं। क्या कह रहे हो, तो आनंद प्राप्त करना चाहते हो? तो आखिरी पंक्ति सुन लो।

मम पद् मनहि बांध बरि डोरी।।

जितने धागे अपने Loving Propensity के अलग-अलग जगह बिछाए हुए हैं, उन सबको इकट्ठा... *मम पद् मनहि,* वो एक मोटा धागा बना के, *मम पद्...* 'पद्'- चरणों में, मेरे चरणों में डाल दो। यदि ऐसा करोगे तो मुझे सबसे प्रिय हो। जो भगवान् के प्रिय

बन जाऐंगें, तो उनके हृदय को स्पर्श कर रहें हैं, तो हमें आनंद प्राप्त हो जाएगा। सारी जगह से अपनी Loving Propensity को हटाओ। हटानी क्यों हैं तुमने? लगाई किसने हैं? खुद ने। तो हटाएगा कौन? खुद हटाओ। हटाओ और लगाओ। Dos and Do nots... Do करो यहाँ पर और Donots करो वहाँ पर। सारी जगह से हटाओ।

यह श्लोक याद रहे, तो व्यक्ति illusion में रह ही नहीं सकता। इतने बड़े helper हैं भगवान्। कितनी मदद कर रहें हैं। सब कुछ खोल के बता दिया, एक-एक शब्द।

यह जो Loving Propensity है न, you cannot annihilate that ! Because you are made to Love... You want Love, You want to Love and You want to be Loved... Nothing more, nothing less will work. Nothing less will ever work..., you want to be loved...

आपने सुना होगा कई लोग बोलते हैं, Is there any happiness greater than Love? सुना है? Is there any happiness greater than Love? यह सही है बात? Is there any happiness greater than Love? अच्छा..., Is there any happiness other than Love? This is the right way...! What do you mean by greater than Love? अच्छा... Can there be any happiness lower than Love? No there cannot be...! Happiness means Love!! Only by Love one can get Happiness... यह basics हमारे को समझने होंगें। You cannot annihilate your loving propensity..., you can only channelize it in the right way, on the right path! Serving Guru and Gauraṅga every moment..., this is the only way by which our Loving Propensity can be fulfilled..., परिपूर्णता प्राप्त होगी इससे हमें। नहीं तो जो भी हम कर लें हम अपरिपूर्ण ही रहेंगें, incompleteness ही feel करेंगें। बाहरी रुप से हम सफ़ल हो सकते हैं। अब सफलता हम लोग धन मान सकते हैं, Building मान सकते हैं, पति मिलना, यह मिलना..., न। भगवान् कभी यह नहीं कह रहे, कि तुम विवाह मत करो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। विवाह करो तो कोई बात नहीं, न करो तो...। वो तो प्रारब्धवश होना है तो हो जाएगा। वो चिन्ता की बात नहीं। चिंता कि बात यह है कि जहाँ पर हो न, वो सब जगह से हटा के, *मम पद मनहि बाधँ बरि डोरी।* वो जो मोटी डोरी है न, गुरु गौरांग के चरणों से बाँध दो। यह सबसे महत्वपूर्ण बात है।

तो Loving propensity जो है, You cannot annihilate... तो हम नहीं, हमें पता नहीं है सही जगह कहाँ डालनी है तो बद्ध जीव क्या करता है? जो आस-पास के लोग हैं, near ones, उनके अंदर ही कोशिश करता रहता है। Repeated failure है, फिर भी

कोशिश करता है। कहाँ कोशिश करनी है? प्रतिक्षण..., प्रतिक्षण प्रेममयी सेवा गुरु व गौरांग की..., प्रतिक्षण। क्यों?

भगवान्, गुरु हमें unconditionally चाहते हैं।

They Love us unconditionally inspite of all our faults...

They have accepted us unconditionally inspite of all our things...

They overlook all our falicies...

The Love is unconditional...

और प्रेम हमेशा दो तरफा होता है। एक तरफा से तो पूरा है। अब हमारी तरफा से पूरा हो जाएगा, तो we will feel ecstacy every moment... एक तरफ से तो पूरा प्रेम है, ताली दो हाथ से बजेगी। अब एक व्यक्ति पूरे आ गया है ९० degree पर, पर दूसरे व्यक्ति को १८० से ९० पर आना पड़ेगा। ताली तो तब बजेगी। तभी one will feel ecstacy..., happiness...

भगवान् को प्रेम न करने के कारण हम गलत जगह पर प्रेम करते हैं। We have forgotten to love The Supereme Person..., भूल चुके हैं। इसलिए किसको प्रेम कर रहें हैं? यह देखो... भाई, माँ, बाप। आप अपने आप से पूछो, जो भी हम चीजें कर रहें हैं, इसमें कभी एक हज़ार साल बाद भी क्या कोई संभावना है, यह जो हमारे object of love जिनको हम बना रहें हैं, इनसे हमें Unconditional Love मिलेगा। आज तक मिला? कितनी उम्र किसी की तीस, किसी की पच्चीस, किसी की बीस, किसी की चालीस। आज तक मिला Unconditional Love? अच्छा आगे मिल सकता है? आपको क्या चाहिए? आप जहाँ try कर रहे हो, क्या वहाँ scope है? Love means unconditional..., कोई condition नहीं है। यह करोगे तो प्रेम। होता क्या है? माताजी की बात मान लो, माता कहे, "मेरा बेटा कितना अच्छा है।" पिताजी की बात, "क्या बात है मेरे बेटे की", पति बात मान ले, पत्नी कहे, "वाह वाह।" पत्नी मान ले, पति कहे, "क्या बात है।" और जैसे ही बात नहीं मानी, "राक्षस है!" पंजाबी में बोलते हैं, 'जमदा-मरदा'। These two very famous words..., they are applied to every, every, every entity of Punjabi..., 'जमदा-मरदा'। जमदा-मरदा तो सब ठीक है but बिना प्रेम के मरदा-मरदा only..., not going to get anything from you, that is for sure...you can't give Me anything...

You know reality is, आप उससे प्रेम चाहते हो माँ से, बीवी से, बेटे से..., बताओ। यह उसी हिसाब से है कि सड़क के चौराहे पर दो भिखारी खड़े हैं, एक भिखारी दूसरे

को बोलता है, "तू मुझे एक अरब रुपए दे दे और वो भी अभी।" अब बताओ, अब आपको भ्रम है कि वह दे देगा। और यह story यहाँ खत्म नहीं हो रही। जो दूसरा भिखारी है न वो भी यही कह रहा है, "तू मुझे दस अरब दे दे वो भी अभी।" यही चौराहे पर खड़े-खड़े..., और पहनने को गम्छा भी नहीं है। तो एक भिखारी दूसरे भिखारी को emperor मान ले, तो इसमें भ्रम किसका है? जो मान रहा है, उसने कभी बोला कि मैं emperor हूँ? मै प्रेमरुपाय हूँ? मैं प्रेमदाता हूँ? हम भजन गाते हैं प्रेमदाता निताई गौर, घर आकर बोलते हैं प्रेमदाता मेरी पत्नी, प्रेमदाता मेरे माता-पिता, प्रेमरुपाय मेरा पुत्र- जिसका नाम कृष्णा है, जिसका नाम निताई है, उसका नाम राम है, श्याम है। यह प्रेमरुपाय है। तुमने एक भिखारी को emperess, emperor मान लिया तो यह है क्या? This is the Perceptual Anesthesia... Perceptual Anesthesia समझते हैं? percept..., percept..., percept...

Perceptual anesthesia... Why are you thinking of a living entity as a Goddess or a God? Why are you taking ordinary male or female who happens to be a father, mother, brother, sister, wife, ससुर-सास and company to be a Goddess of Love? Are you going to get Reciprocated Love via them? Ask yourself. Have you ever got? No. Are you ever going to get? No. Then why are you trying now? प्रश्न तो यही है न? Why are you trying in vain? Why are you robbing yourself of the sheer happiness you can get? No one is doing anything else..., I mean you are robbing yourself of the sheer happiness which you can get every moment! You are robbing yourself of the ecstasy you can get by trying to love matter, material people...

Love can be experienced by worshipping Spiritual Personalities, God, Guru..., then you can get love..., not by any male or female of this world... By male or female you can get only physical things, subtle things, but not spiritual thing- Love...! Only Love is Love..., only Love is Love..., and Love is Reciprocated Love... Love gives greatest happiness people think, but this is kiddishness... Only Love gives Happiness. What "greatest"? यह greatest क्या होता है? "छोटीest" happiness भी होती है... "छोटीest" What is this? Greatest..., कोई Greatest नहीं होता, shortest नहीं होता। Only Happiness होता है। Love gives happiness..., बस। Greatest क्या होता है? यह हमारे को illusion हटानी होगी। Love gives Strength... No...! When you have strength, you love... What do you mean by 'love gives strength'? Love gives happiness..., बताया है न? यह क्या होता है 'love gives strength'? When you have sufficient strength, तो तुम सारी जगह से हटा के गुरु गौरांग के चरणों में डाल दो। And Love gives happiness...

यह जो इधर-उधर बिछाया हुआ है, यह तो अपना हमनें जाल बुना हुआ है, trap कर रहें हैं सबको। किसमें? We are trapping everyone and trying to give ourself..., we are trying to trap everyone in the concept of happiness we have conceived in our minds..., we are trying to..., trying to trap everyone, mother, father, sister, brother, son, daughter, husband, mother-in-law, father-in-law, brother, servant and whatever relation friend...., बंधु सुत् दारा..., in the concept of happiness I have designed for myself..., we are trying to trap everyone..., बैठे हैं एकदम दबोचने के लिए सबको। जैसे आप बैठे हो न उसे शेर की तरह दबोचने के लिए, वैसे ही साथ वाला भी बैठा हुआ है। एक घर में चार लोग नहीं हैं। एक घर में चार शेर हैं। सब एक दूसरे को दबोचने के लिए बैठे हैं। यह घर नहीं होता, it's a collection of strangers..., collection of lions..., tigers..., यह हम नहीं बोल रहे। यह भागवत् बोल रही है। यह पाँचवा स्कंद पढ़िएगा इसलिए मंगवाया है। Page no. 472..., husband, wife, children को tigers and jackals बोला गया है। Jackals, what do you say in hindi? Jackals..., सियार..., सियार, शेर, खून चूसने वाले। सब दबोचने के लिए बैठे हैं। जैसे आप बैठे हो न, you are trying to trap everyone, वैसे ही everyone is trying to trap you..., everyone! This is a place of..., where everyone is trying to trap everyone, in their concepts of happiness..., designed for themselves..., Designer suits हैं सबके।

और बोलते हैं, हर कोई बोलता है एक दूसरे को-"I love you.." अच्छा! I love you बोलने के लिए, "I" बताओ कौन। "I" कौन? Icon नहीं! "I" कौन? what is "I"? तुमको "I" का पता नहीं। "Love" तो Reciprocated Love होता है..., कभी सुना है Reciprocated Love होता है "Love"...? "Love" तो पता हो ही नहीं सकता। "You" भी नहीं पता होगा कौन है। तो "I love you" से fake statement इस संसार में कोई हो सकती है? The worst statement ever repeated everyday by everyone... Fake! Complete fake! Top to bottom...! I love you... I love you बोलने का मतलब है, अगर कोई बोले, तो हमेशा याद रखना एक word - 'Āgrā'... Āgrā मतलब की, कोई Āgrā के पागलखाने से आकर आपको बोले "I love you", तो आप वास्तव में मानोगे उसको? "अरे, पागल है बिल्कुल।" पागल की..., पागल की बात मानते हैं कोई? उसी प्रकार से जो व्यक्ति स्वयं को नहीं जानता, उससे बड़ा पागल कौन हो सकता है? तो कोई व्यक्ति बोले, "I love you", मतलब वह Āgrā से आया है। और जो मान ले, तो वह Āgrā में ही रहता है। मानने वाला भी, बोलने वाला भी...। ऐसा नहीं है कि, Love is blind and marriage is an eye-opener... Only lust is blind, lust is blind... Love is

प्रतिक्षण वर्धमानम्। Eye-opener क्या होता है? Love is happiness... What is love is an eye-opener? यह क्या होता है? Clear all your conceptions of love, about happiness.

Love in essence is Spiritual fire. If..., if Love is not madness then it is not love... If something is not madness it cannot be..., you can call it any other thing, it is not Love.. Actually one who has learnt to love he has learnt to live... We have to learn to love to learn to live..., we have to learn to love to learn to live. You cannot live until and unless you learn to love... Love is the word which is spoken by everyone but understood by very few..., spoken by everyone, even a Bhikhārī can speak, Prime Minister can speak..., but even the highly Spiritual Saints cannot understand..., this is Love.. Love by definition is Reciprocated Love...

अब माँ-बाप, भाई बहन में होता नहीं पूरा तो क्या करते हैं भाई? Illicit Relationship पत्नी करती है, पति करता है, लड़के-लड़कियाँ करते हैं, बताओ। तुम क्या सोच रहे हो, इससे नहीं मिलेगा, उससे मिल जाएगा। Perceptual anesthesia..., yet again... उसमें डाल दिया, कि She is a Goddess of Love... Oh, I have found my Goddess of Love... She was not but She is the one..., Goddess of Love! Oh, He is not the one, He is the..., अनंग..., कामदेवाय..., अनंग रूप..., अनंग..., Spiritual Cupid, Transcendental Cupid..., my husband, my friend...

अरे बाबा, एक गड्ढे से निकलकर क्यों दूसरे गड्ढे में जा रहे हो, गिर रहे हो? थके नहीं इतने युगों से धक्के खा-खा के अभी तक? इतने युगो से आए हो, फिर वहीं। इतने..., सोचो किसको आनंद चाहिए? इतने युगों में आए कोई नहीं मिला, फिर, यह जो सामने दिखा यह दे देगा? हमारी बेवकूफी की सीमा तो देखिए, अनंत युगों से कोशिश कर रहें हैं, पता है न, किसी ने नहीं दिया, यह कैसे दे देगा बताओ।

यह धन में कुबेर है?

सुंदरता में कामदेव है?

बुद्धि में गणेश है?

क्या है?

अच्छा है भी सही, तो भी आनंद नहीं मिलेगा। इन्द्र क्या बोलते हैं? - "ब्रहमां पदम् वांछति।" इन्द्र जो है ब्रहमा का पद् चाहता है। हमारे पिताजी तो एक की दो बिल्डिंग

बनाना चाहते हैं। उनसे तो हमें ज़रुर आनंद मिलेगा..., पत्नी से भी, matching suit की इच्छा करने के बाद। Matching suit चाहिए, चप्पल matching चाहिए, shawl के साथ।

Love is not weakness... Loving Guru and Gaurāṅga is the Highest form, is the only form of Strength..., कि अपनी सारी weakness को हटा के उसको strength बनाओ, जिससे you can get happiness. पतांजलि कहते हैं "बलानि...", be strong by excelling in love.. बलानि! बलपूर्वक...! Be strong by excelling in love..., strong बनो by excelling in love.

प्रेम का मतलब पता है क्या है? वास्तव में किसी को अगर हम प्रेम करना चाहते हैं, तो स्वयं को तो विस्मरण करना होगा। प्रेम मतलब एक आत्मा, actually one soul inhabiting in two bodies... Considering happiness of the Object of Love our only thing..., then only we can love! Our Object of Love, Rādhārānī, Gaurāṅga, Guru..., considering only Their happiness as our happiness... Considering, seeing Their happiness and recognizing that happiness as our own happiness..., only then we can love... मेरी भाषा समझ आ रहा है? गुरु गौरांग के आनंद को स्वयं का आनंद...., यही तो मंजरी भाव है। राधारानी के भाव के साथ इतना भाव तादात्मय हो जाता है, कि वही आनंद मंजरियाँ अनुभव करती हैं, जो ललिता विशाखा भी नहीं करतीं।

Reality क्या है, इस संसार में जो भी हमारे संबंध हैं..., हम तो आनंद चाहते हैं, किससे? उनसे। पर अगर आपको बुरा न लगे तो अब थोड़ी सच्चाई बताऐं? What to talk of loving you, no one in this universe is interested in you... Loving तो topic को छोड़ दो। किसी की आप में रुचि ही नहीं है। Love में..., आप में, love करना तो topic ही अलग है। No one is interested in you, no one is interested in your happiness..., no one in this universe is interested in your happiness..., and no one in entire universes, entire galaxies is interested in your happiness other than Guru and Gaurāṅga...

और थोड़ी बात बताऐं खोल कर? Actually you are not interested in anyone's happiness..., game पूरी दो तरफा है। Neither you are interested in their happiness, anyone's happiness, nor anyone is interested in your happiness... और दोनो क्या एक दूसरे को कहते है? वह बोलता हैं- "I love you", वह बोलता है - "I love you too.. I

love you three.." अरे दोनो झूठें हैं। Two number भी झूठा है पहला भी झूठा है। सारे झूठों के collection हैं, शेर चीतों के।

अब, जिस क्षण हम गुरु गौरांग के बजाय किसी को, माँ बाप भाई बहन वगैरह को Object of Love मानते हैं, इसका मतलब है we are trying to trade Kṛṣṇa for a son or a husband..., we are trying to trade Kṛṣṇa..., मेरी भाषा clear है? धंधा कर रहे हो? What is trade? व्यापार। तुम व्यापार कर रहे हो, कृष्ण की बजाय उनको डालकर? कृष्ण हैं "असर्मोध्वा", मेरे जैसा कोई है ही नहीं भगवान् कहते हैं। जब भगवान् से बोला, वरदान माँगा सुतपा ने, पृष्नि ने, कि भाई आप हमारे पुत्र रूप में आ जाओ, तो उन्होनें क्या बोला? कि आप के जैसा कोई..., उन्होने बोला, मेरे जैसा तो कोई है ही नहीं, मै तो असर्मोध्वा, no one like me..., तो मैं ही आऊंगा न।

अब Object of Love होने चाहिए गुरु गौरांगा। उनकी जगह पर हम बनाते हैं पत्नी पतांगा। जो भी है..., पतांगा..., all this..., relatives and..., *जननी जनक बंधु सुत दारा।* वो ही five Perceptual anesthesia... Objects..., जननी, mother, father, friends, wife... *सब कै ममता ताग बटोरी, मम पद मनहि बांध बरि डोरी।* ऐसा नहीं है भक्ति में- "I have a normal family life and I am trying to do Bhakti also..., I am trying to love Guru Gauraṅga..." यह कौन सी भक्ति हुई? यह कौन से शास्त्र में बताया गया है? आप क्या कह रहे हो, हम तो first class हैं जी, और भक्ति में, वो भी अच्छी चल रही है। आपको आगे कुछ बोलने की ज़रूरत नहीं है।

Ask yourself, Are you going to get unconditional love through your..., through mother, father, husband, daughter, little daughter..., little son?

Are you going to get that? Unconditional Love!

जो आप सोच रहे हो आपको गुरु से गौरांग से प्राप्त नहीं होगा वो आपके पुत्र-पुत्रांग से प्राप्त होगा? मतलब, पुत्रांग means दोहता-दोहती and grand पोता, पुत्रांग। आपको मेरे को पता नहीं क्या-क्या बुलवाना पड़ता है।

Let your religion be more of love than of a theory..., let your religion be Love..., and you all become preist of Love... प्रेम के पुजारी बनना है, न की, "हम भक्ति भी कर रहें हैं..." सुकृति वाली करनी है तो ठीक है, आपका नाम हो जाएगा सुकृति यह और..., भक्ति तो अलग ही बात है। प्रेममयी और वो भी प्रतिक्षण।

कितने लोगो को आपने trap करने की कोशिश की है, कि यह मेरे को आनंद दे, आज तक कोई trap हुआ है? अनादि काल से। इस जीवन में..., अच्छा नही, अनादि काल को भूल जाओ, इस जीवन को ही देख लो, कोई हुआ है trap? नहीं हुआ न। चलो आपको और कहानी सुनाऐं। जैसे कि आपकी उम्र कितनी है? किसी की बीस-पच्चीस-तीस। तो forget anyone loving you..., does anyone respect you? Anyone respects you for what you are? And this respect is a starting, beginning of happiness... How can anyone love you if he cannot even respect you? We are soo filthy..., rascals..., कि no one can even respect us, then how can anyone love us? We want Love..., Ok! What's the beginning? Respect..., I have told thousands of times... Love, Respect..

Respect Everyone...

Serve Everyone..

Love Everyone...

कितना सुना है सबने। Respect ही नहीं है। बताओ आप में से पति-पत्नी है अगर किसी के, कौन किसी की Respect करता है..., आप एक दूसरे को जानते हो? आप करते हो? Ok! करते हो तो अच्छी बात है। I am not saying कि आप नहीं करते। करते हो बहुत अच्छी बात है। Someone is in illusion..

आचार्य लोग बताते हैं तीन प्रकार की बुद्धि होती है-

एक जो श्रवण करके मान जाऐं, कि भाई हमें इनसे आनंद, प्रेम नहीं मिलेगा। और फिर वह कोशिश नहीं करेंगें।

दूसरे होते हैं जो लात खाऐंगें- अब नहीं करेंगें कोशिश।

तीसरे होते हैं mostly living entities.... वे बार-बार लात खाते हैं, फिर बार-बार जाते हैं। Perpetual Donkeys. Cats and Dogs नहीं। Donkeys and Monkeys..., the Monkeys go back again and again..., and they become Donkeys..., क्योंकि लात पड़ेगी न। Monkeys become Donkeys..., in search of happiness... Monkeys becomes Donkeys in search of happiness and love... This is the Reality of Life!

Listen! Don't get befooled by people of Kaliyuga..., don't get befooled..., don't get befooled. Don't get befooled by human emotions... Human emotions should not

deviate your love for Guru and Gaurāṅga... They..., all these your Objects of Love are human beings..., or they are something else? Goddesses? Lalitā Viśākhā Rūpa Mañjarī are your family members? I don't think so... If they are not, better not try, atleast become a second class disciple..., सुन के मान जाना। Don't become third class..., sure enough you are not first class... Atleast become second class..., don't become third class...

And..., listen! 'Be Aware' and 'Beware' of Ignorance... Be aware - जानो। Be aware and Beware... What is this Beware? सावधान। जानो और सावधान रहो अज्ञानता से, यह कोई नहीं प्रेम करने वाला तुमको। एक बात। दूसरी बात तुम भी नहीं प्रेम करने वाले इनको। प्रेम दो तरफा है आपका बिल्कुल। चार चीते बैठ के एक दूसरे को प्रेम करने बैठ जाऐं, ऐसा कभी न हुआ था, न हुआ है, न होगा। सबके घर के बाहर एक बोर्ड लगा होना चाहिए- Chītāha Family... all Chītāhas live here... Chītāha Babbar.. Chītāha Verma.. Chītāha Sharma! Okay!

Beware and Beaware of ignorance! Beware..., Be aware..., of ignorance..., if you want to be happy... Otherwise you can do, continue whatever you want to continue... इतने जन्म बर्बाद किए हैं एक और सही। What's new deal about it? But I am here to give you a new being.. I am here to raise your bar. Why have I come here? क्यों आया हूँ? To raise your bar..., बैठे-बैठे आपको raise करना है। संत मतलब ही है, अपनी वाणी से आपको भगवान् से जोड़ दे।

And if you have understood what is Love and what is Happiness... To love is to act..., if you have really understood Love then you should act on that platform..., if you have understood happiness then you should act on that platform... To love is to act..., to love is not to sleep again... To love means..., to be really able to love, to really love someone, you act on that platform, no...? Your actions speak louder than words..., have you understood or not? कोई बोले मैने churning बहुत करी, Phone पर करी और Class में करी, छोटी वाली Class में भी और बड़ी वाली में। Churning तो सब ठीक है, महाशय कर क्या रहे हो आप? Churning तो सब बहुत अच्छी बात है।

"राधिका-चरणरेणु, भूषण करिया तनु, अनायासे पावे गिरिधारी।
राधिका चरण आश्रय, सेई से महाशय, तारे मुइ जाइ बलिहारी।।"
(श्री श्री प्रेमभक्तिचन्द्रिका १०७ - श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

जो सुन के समझ गया, आश्रय ले लिया, वही महाशय है।

Tell yourself, ask yourself, who is the most important person in my life? Ask yourself- who is the most important person in whom I should channelize all my loving propensities? Ask yourself! Actually Love is the truest wisdom... What is wisdom? बुद्धिमता, ज्ञान, विज्ञान? क्या है wisdom...? Wisdom is, ultimately you channelize all your loving propensities correctly...! Otherwise what else is your..., what else is wisdom? Love is the truest wisdom! One who has learnt to love, he has learnt to live...

कोई जिज्ञासा?

Can anyone who loves, can he ever be poor? गरीब कौन है? जिसके चारों और चीते हैं, और हर किसी को कोई prey की तरह देखता है जो, वह गरीब है। Rich person means who is loved and who is able to love..., that is a rich person! Bill Gates is a poor person. He cannot love anyone..., no one can love him... But you can..., you can become a rich person..., you can love or you can be loved... ताली एक तरफा तो है ही। दो तरफा होगी कि नही वो तो हमारे ऊपर निर्भर है।

भागवत् के ११.२.३७, उसमें बताया गया है, पूरे Material World, Spiritual Worlds का जो सार है, इस श्लोक के अंदर है। ११.२.३७..., उसमें बताया गया है उपाय - "गुरु देवतात्मा"।

"भयं द्वितीयाभिनिवेशतः स्यादीशादपेतस्य विपर्ययोऽस्मृतिः।
तन्मायया तो बुध आभजेत्तं भक्त्यैकयेशं गुरुदेवतात्मा।।"
(श्रीमद् भागवतम् ११.२.३७)

Considering Spiritual Master as one's Worshipable Deity, as one's life and soul... One who cannot love Guru, he cannot really love anyone else... God will come ,ok..., but unable to see The Lord... it's difficult for most of the people..., so गुरु देवतात्मा।

और यहाँ बता रहें हैं भगवान् कि, *जननी जनक बंधु सुत दारा...*, यहाँ पर मत लगाओ। और साथ में क्या बोलते हैं लोचन दास ठाकुर इत्यादि?

"गुरु माता गुरु पिता, गुरु होन पति।
गुरु बिना आमार नाहि अन्य गति।।"

गुरु ही माता हैं। गुरु ही पिता हैं। गुरु ही पति हैं। गुरु ही सब कुछ हैं।

फिर,

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।"

(श्री गुरुस्तोत्रम् 3)

अनेक प्रकार से भगवान् कहते हैं, कहाँ पर channelize करना है अपनी loving propensities सारी? हर प्रकार से। Whatever we have, we should channelize everything..., then we can get..., if you channelize everything, you will get everything..., you will not channelize everything, will not get everything! Everything means Happiness, Love..., nothing else! Whatever we have, it is for what? For Love, for Happiness... If after having everything, we don't get anything, what good is everything? If after having everything, we don't get anything, what good is everything?

कई संस्थाओं में होता है कि Full time बनाने के पीछे काफी भक्तलोग होते हैं। मेरा ऐसा स्वप्न में भी नहीं होता। मैं हमेशा चाहता हूँ आप भक्त बनो। आप भक्ति करोगे, आप कहीं भी रहोगे, आप खुश रहोगे। हमें मतलब नहीं है, आप कहाँ रह रहें हो पर आप खुश रहो- यह मतलब है। जहाँ पर रहो, इस श्लोक को कण्ठ, गले का कण्ठहार बना लो। *जननी जनक बंधु सुत दारा, तनु...*, शरीर के अंदर कितनी ममता है हमारी। इसको हम creams लगाऐंगें, इसको हम Brand, Brand पहनाऐंगें..., कैसे गंदे-गंदे शौक हैं। I wear this Brand..., बोलते हैं, I wear this perfume..., ऐसे भी language होती है। I have heard these stupid people, they talk like this.. I wear this perfume, I wear this Brand... तनु, धन। धन के प्रति कितनी ममता है। तनु धन भवन, भवन मतलब, भवन मतलब बिल्डिंग, office... सुहृद, friends..., परिवारा।

Can your Object of Happiness be your wife? Object of Reciprocated Love? Your's? Your? Then find the right Object..., simple! No price for guessing the answer..., find the right Object...

True love is just like you know ghosts..., many people talk about it but hardly, very rarely people see it. You know ghosts, भूत..., so many people talk about it, but hardly anyone sees...

Once a disciple told me, "Gurujī, so many people say I love you..., it is very hard to see people saying..., it's not hard to see people saying I love to you... I love you to you, it's very hard to see people really meaning it... Everyone says, their followers, they love you..., hardly, really meaning it... If one really means it then actions speak louder than words, no price for guessing...

And don't do anything half..., if you love someone, love with your heart and soul. Don't do anything half... जो करें, पूरा..., all loving propensities... It is you know, loving like this you know means what? It is not two souls..., two souls नहीं रह जाते है, two beings नहीं रह जाते..., just one being, just one being, inhabiting two bodies. It's just like that... This is..., I mean this kind of love means, you are allowing someone the power to destroy you, but you know, they are going to love you, manifold... The kind of love required to get happiness is this kind of love, giving someone full power to destroy you... Of course..., when we give ourself fully, we get everything back... When you give everything, you get everything..

यह जो श्लोक भगवान् ने बताया, *बंधु सुत दारा...*, भगवान् ऐसी कोई भी बात नहीं बताते, जो की हमारे लिए कष्टप्रद् हो या हानिकारक हो। वह हमारे को peace formula बता रहें हैं। अब तक हम लोग न अपने concepts में है..., भगवान् को formula पता है असली का..., giving us the real knowledge. Even to think that I am being loved, this gives tremendous satisfaction. Now I am being loved, atleast by someone! आज तक by none..., now atleast by someone.

Love का मतलब है, it is concerned only with 'giving'..., only with 'giving'. And the second effect, secondary effect कि taking care of ourself, वो automatically अपने आप होगा। बोले, प्रेम करके क्या मिलेगा? अरे, Love itself is its own reward. What is the reward of Love? Love itself is its own reward..., because when you love, you get

happiness, when you truly love… Love means not taking, Love means giving... Love means not gaining, Love means giving…, giving, giving…, every moment giving, giving, giving...

अच्छा कैसे पता चलेगा की हम प्रेम कर रहें हैं कि नहीं गुरु गौरांग को? अगर हमें स्मरण हो जाए कभी, कि हम प्रेम कर रहें हैं तो वो प्रेम है ही नहीं। राधारानी को कभी नहीं लगता की उनके अंदर प्रेम है। वह सोचती हैं मेरे से काली कलूटी कोई नहीं, मेरे से selfish कोई नहीं, मेरे से बदसूरत कोई नहीं, मेरे से स्वार्थी कोई नहीं। हमें क्या लगता है? मेरे से ज़्यादा प्रेम करने वाला कोई नहीं, मेरे से ज़्यादा अच्छा कोई नहीं। Actually you can tell, you can make anyone learn to love but you cannot tell a person to love who is a self righteous person…, खुद को ही मानता है - "अरे, I love everyone... I love Guruji, I love this, I love that..." ऐसा नहीं होता। आपको feel ही नहीं होगा आप किसी को प्रेम…, और जब तक feel हो रहा है इसका मतलब…

यह जो, This hunger of heart has to be quenched… नहीं तो यह दिन रात हमारे को जलाएगा।

Goal is clear…, Love. Have to find the right Object, and channelize all propensities. Trust in what you…, trust in your Object of Love and it will take you where you want to go. Have full trust in your Object of Love and it will take you here you want to go. Have full trust in your beliefs…, don't believe your doubts and don't doubt your beliefs...

Let 'I love you'…, let this…, let this phrase not be…, let this phrase be our life…

हम कितना भी smile करने की कोशिश कर लें, beauty parlour में paint लगा के आ जाएँ, तो अगर वह smile, वह नहीं आ सकता जो एक वास्तव में, एक संत को, एक भक्त को होता है जो giving करके आता है, प्रेम करके आता है। मैं तो संतो के पास जाना चाहता हूँ उनके smile के लिए, क्यों? प्रेम से परिपूर्ण है। हम एक करोड़पति रिश्तेदार, उनके पास क्यों नहीं जाना चाहते? अरबपति रिश्तेदार? उनके पास जाओ, हमारा घर ही एक अरब का है। एक अरब वाले का वह smile नहीं है, जो एक संत का है। आहा… भीतर से है…, वो बाहर से है।

आप आज के सत्र को अपने जीवन में लगाऐं, यह हार्दिक कामना करते हैं। इस सत्र को लगाए बिना आनंद, प्रेम का लवलेश भी प्राप्त नहीं होगा।

हरे कृष्ण।

कोई जिज्ञासा है, अभी भी, तो बता सकते हैं।